शाश्वत राष्ट्रबोध

प्रकाशन तिथि ०१-०९-२०१९

वर्ष - ३० अंक - ९ सितम्बर २०१९ विक्रम संवत् २०७६ पृष्ठ - २० सहयोग राशि - ५.००

जम्मू-कश्मीर के सचिवालय पर तिरंगा और स्वतंत्रता दिवस पर राज्यपाल सत्यपाल मलिक

भारतीय संसद का नागरिक अभिनंदन समारोह में उपस्थित प्रबुद्ध वर्ग - रायपुर, 17-08-2019

जनकल्याण समिति के मार्गदर्शन में सैकड़ों कार्यकर्ता बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में आपदा पीड़ितों की सहायता करते हुए (सांगली-महाराष्ट्र)

अभ्युदय अध्ययन मंडल, वाचनालय, अम्बिकापुर (छ.ग.) का शुभारंभ - 17-08-2019

सुभाषित

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते॥

अर्थात्– श्रेष्ठ व्यक्ति जो-जो आचरण करता है, सामान्य जन भी वैसा ही आचरण करते हैं। वह व्यक्ति जो कुछ भी उदाहरण प्रस्तुत करता है, सारा संसार उन्हीं का अनुसरण करने लगता है।

संपादकीय

जो काम गत 70 वर्षों से कोई प्रधानमंत्री नहीं कर सका, उसे 5-6 अगस्त को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने किया। जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 और 35ए हटा। जबकि, अनुच्छेद में ही उसे हटाने का प्रावधान भी निहित था। लेकिन, उसमें एक शर्त ऐसी थी, जिसे कश्मीरी नेता कभी पूरी होने नहीं देते थे। जम्मू-कश्मीर विधानसभा की अनुशंसा पर राष्ट्रपति अपना आदेश जारी करके इस अनुच्छेद को हटा सकते थे लेकिन, कश्मीरी राजनीति पर हावी कुछ निहित स्वार्थी वर्गों ने कभी भी इस प्रकार की तकनीकी कठिनाइयों से अधिक मनोवैज्ञानिक ग्रंथियों के कारण अनुच्छेद 370 जम्मू-कश्मीर की राजनीति में घुन की तरह लगा था जिसका दुष्परिणाम पूरा भारत महसूस करता था। इस अनुच्छेद के माध्यम से कुछ खतरनाक प्रवृत्तियों को भी शह मिल गई थी। इसी अनुच्छेद की आड़ में प्रदेश में लोकतान्त्रिक शासन व्यवस्था को नकार कर एक वर्ग विशेष की शासन व्यवस्था स्थापित करने का मजहबी माहौल निर्माण किया गया। लेकिन, अब नेताओं, विचारकों और युवकों में एक लम्बी निराशा के बाद एक आक्रोश की स्थिति निर्माण हुई थी, उसे देखते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक जोखिम भरा कदम उठाया, उन्हें विश्वास था कि, वर्तमान हालात में भारतीय जनता के प्रतिनिधि इस कदम के समर्थन में खड़े होंगे। देश ने संसद के दोनों सदनों में यही विश्वास सफल होते देखा। अनुच्छेद 370 हटाने के पक्ष में आम भारतवासी केन्द्र सरकार के साथ खड़ा दिखता हैं।

ए महिना के तिहार

ए महिना के पहिली तिहार मन म पहिली तारीक के हरितालिका तीजा हवय। तेकर बाद दू तारीक के गणेश चौथ परिही। छह तारीक ले महालक्ष्मी व्रत सुरु होही। बारह तारीक के अनंत चौदस (गणेश विसर्जन) हवय। अठ्ठाइस तारीक के पितर अमावस, उन्तीस तारीक ले नवरात सुरु होही। महिना के पहिली एकादसी (पद्मा) नौ तारीक अऊ दूसर एकादसी (इंदिरा) पच्चीस तारीक के परिही।

हरितालिका तीज	**भाद्रपद शु. 03**	**01 सितम्बर**
श्री गणेश चतुर्थी	**भाद्रपद शु. 04**	**02 सितम्बर**
महालक्ष्मी व्रतारम्भ	**भाद्रपद शु. 08**	**06 सितम्बर**
पद्मा एकादशी	**भाद्रपद शु. 11**	**09 सितम्बर**
श्री गणेश विसर्जन (अनंत चतुर्दशी)	**भाद्रपद शु. 14**	**12 सितम्बर**
इंदिरा एकादशी	**आश्विन कृ. 11**	**25 सितम्बर**
पितृमोक्ष अमावस्या	**आश्विन कृ. 15**	**28 सितम्बर**
नवरात्र प्रारम्भ	**आश्विन शु. 01**	**29 सितम्बर**

आघू पाछू के पन्ना म जेन पुरखा मन के फोटो छाप के सुरता करे हन, ओ मन के संगे संग नौ तारीक के भारतेन्दु हरिशचंद्र, दस तारीक के गोविन्द वल्लभ पंत अऊ छब्बीस तारीक के ईश्वरचंद्र विद्यासागर के जन्मदिवस हवय। ग्यारह तारीक के महादेवी वर्मा अऊ गजानन माधव मुक्तिबोध के पुण्यतिथि हवय। पन्द्रह तारीक के कुप्प.सी. सुदर्शन अऊ सत्ताईस तारीक के राजाराम मोहनराय के पुण्यतिथि घलौ परिही।

आजकाल के दिवस मनाए के रद्दा म पांच तारीक के शिक्षक दिवस, आठ तारीक के विश्व साक्षरता दिवस, चौदह तारीक के हिन्दी दिवस, पन्द्रह तारीक के अभियंता दिवस, सत्ताईस तारीक के विश्व पर्यटन दिवस अऊ उन्तीस तारीक के विश्व हृदय दिवस घलौ मनाए जाही।

अऊ कोनो तिहार छूटे होही तेला बताहा, त आघू सकेलबो।

जय जोहार - जय माँ भारती।

बलिदानी सैनिक के परिवार का नए घर में गृह प्रवेश, वीर नारी के मार्ग में युवाओं ने बिछाई हथेलियां

इंदौर (मध्य प्रदेश) के ग्रामीण क्षेत्र के युवाओं ने उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया है, जिसकी जितनी प्रशंसा की जाए वह कम है। क्षेत्र के युवाओं ने जनसहयोग से 27 साल पहले देश पर बलिदान हुए सीमा सुरक्षा बल (BSF) के जवान के परिवार के लिए पक्का घर बनाकर दिया। बलिदानी सैनिक का परिवार अभी तक एक झोपड़ी में गुजर बसर कर रहा था। युवाओं को परिवार की स्थिति के बारे में जानकारी मिली तो युवाओं ने अभियान शुरू कर 11 लाख रुपये की राशि एकत्रित कर डाली। स्वतंत्रता दिवस के दिन परिवार का गृह प्रवेश हुआ और युवाओं ने परिवार के स्वागत के लिए मार्ग में अपनी हथेलियां बिछा दीं। क्षेत्र के युवाओं का यह प्रयास सराहनीय है।

स्वतंत्रता दिवस पर सौंपी गई मकान की चाबी—स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर शहीद की पत्नी से राखी बंधवाकर उन्हें मकान की चाबी सौंपी गई। इसके साथ ही ध्वज वंदन भी किया गया। पीर पीपल्या गांव के मोहन सिंह बीएसएफ में थे। असम में पोस्टिंग के दौरान वे 31 दिसंबर 1992 को वीर गति को प्राप्त हो गए थे। उनका परिवार तभी से झोपड़ी में रह रहा था। उनकी हालत देख कुछ युवाओं ने 'वन चेक-वन साइन' नाम से अभियान शुरू किया। अभियान से जुड़े विशाल राठी ने बताया कि, मकान बनाने के लिए 11 लाख रुपये इकट्ठा कर लिए। स्वतंत्रता दिवस के दिन परिवार का नए घर में गृह प्रवेश हुआ। गृह प्रवेश के दौरान युवाओं ने वीर नारी के मार्ग में हथेलियां बिछा दीं, जिन पर चलकर वीर नारी ने नए घर में प्रवेश किया।

मोहन सिंह जब वीरगति को प्राप्त हुए थे, उस समय उनका तीन वर्ष का एक बेटा था और पत्नी राजू बाई चार माह की गर्भवती थीं। बाद में दूसरे बेटे का जन्म हुआ। पति के बलिदान के बाद दोनों बच्चों को पालने के लिए पत्नी ने मेहनत-मजदूरी की। झोपड़ी में ही परिवार गुजारा कर रहा था, जिसे टूटी-फूटी छत पर चद्दर लगाकर और बांस-बल्लियों के सहारे जैसे-तैसे खड़ा किया गया था। यह विडंबना ही कही जाएगी कि परिवार को किसी सरकारी योजना का लाभ नहीं मिल पाया।

परिवार के लिए दस लाख रुपये में घर तैयार हो गया। एक लाख रुपये मोहन सिंह की प्रतिमा के लिए रखे गए। प्रतिमा भी लगभग तैयार है, जिसे पीर पीपल्या मुख्य मार्ग पर लगाया जाएगा।

प्रेरक प्रसंग

सच्चा सेवक

एक बार सीता देवी ने हनुमान जी की निष्काम सेवा से प्रसन्न हो कर उन्हें अपने गले का हार इनाम में दिया। हनुमान जी उस हार को लेकर एक तरफ गये और हार में से एक-एक हीरा निकाल-निकालकर, उन्हें फोड़कर, टुकड़ों को हाथ में ले आकाश की ओर मुंह कर देखने लगे। लोगों ने जो देखा, तो वे खिलखिलाकर हंसने लगे। आखिर उनमें से एक ने हनुमान जी से पूछा, तो उन्होंने उत्तर दिया, ''मैं हीरों को फोड़-फोड़कर यह देख रहा हूँ कि, इनमें कहीं राम हैं या ये बिना राम के ही हैं। यदि इनमें राम हों, तो मेरे योग्य हैं, अन्यथा ये निस्सार हैं।'' और तब लोगों को हनुमान जी के सच्चे सेवाभाव की प्रतीति हुई और उनके मुख से 'धन्य-धन्य' शब्द निकल पड़े।

जम्मू कश्मीर में भारतीय संविधान पूर्ण रूप से लागू

05 अगस्त 2019 का दिन जम्मू कश्मीर व भारत के इतिहास में यादगार बन गया है। इसके बाद जम्मू कश्मीर राज्य संवैधानिक, राजनीतिक और भौगोलिक रूप से हमेशा के लिए बदल गया है। संसद में जम्मू कश्मीर पुनर्गठन बिल पास होने के बाद जम्मू कश्मीर दो केन्द्र शासित प्रदेशों में बंट गया।

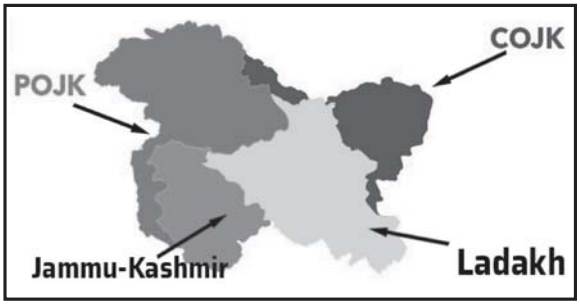

पहला प्रदेश होगा–जम्मू कश्मीर (जहां विधानसभा होगी, उदाहरण- दिल्ली) और दूसरा केन्द्र शासित प्रदेश होगा–लद्दाख (यहां विधानसभा नहीं होगी, उदाहरण- लक्षद्वीप)। इसी के साथ दोनों राज्यों के नागरिकों के अधिकार, प्रशासनिक व्यवस्था और कानूनों में भी बदलाव आएगा। मुख्य बदलाव आएंगे—

1. जम्मू कश्मीर राज्य का संविधान समाप्त हो गया है। दोनों केन्द्र शासित प्रदेशों में वही कानून लागू होंगे जैसे दिल्ली में होते हैं।
2. जम्मू कश्मीर में राज्य का अब कोई दूसरा ध्वज नहीं होगा। दोनों ही केन्द्र शासित प्रदेशों में केवल तिरंगा फहराया जाएगा।
3. जम्मू कश्मीर केन्द्र शासित प्रदेश में विधानसभा होगी। लेकिन, अब इस राज्य में कितने विधानसभा क्षेत्र होंगे, प्रत्येक क्षेत्र का क्षेत्रफल क्या होगा। ये नये सिरे से तय किया जाएगा। यानि अब राज्य में नये सिरे परिसीमन किया जाएगा। इसी के साथ जम्मू और कश्मीर में भेदभाव पूर्ण सीटों के बंटवारे का विवाद भी खत्म हो जाएगा।
4. जम्मू कश्मीर से अनुच्छेद 35 की समाप्ति के बाद राज्य के दलितों, पाकिस्तानी शरणार्थियों, गोरखाओं और आधी आबादी महिलाओं को सारे बराबरी के अधिकार मिलेंगे।
5. जम्मू कश्मीर अनुसूचित जनजाति वर्ग को राजनीतिक आरक्षण प्राप्त होगा। विधानसभा और लोकसभा में सीटें आरक्षित होंगी।
6. पंचायती राज व्यवस्था (त्रि-स्तरीय) जम्मू कश्मीर में लागू की जाएगी। यानि ग्राम पंचायत, क्षेत्रीय पंचायत और जिला पंचायत की व्यवस्था लागू होगी।
7. जम्मू कश्मीर में भारतीय संविधान की प्रस्तावना पूरी लागू होगी। पहले सेक्यूलर और अखंडता शब्द जम्मू कश्मीर में लागू नहीं थे।
8. भारतीय संविधान द्वारा दिया गया शिक्षा का अधिकार भी राज्य में लागू होगा।
9. जम्मू कश्मीर विधानसभा का कार्यकाल अब छह से पांच वर्ष हो जाएगा। साथ ही विधान परिषद् समाप्त हो जाएगी।
10. जम्मू कश्मीर में न्यायाधिशों और मंत्रियों की शपथ में परिवर्तन कर भारतीय संविधान के प्रति निष्ठा का क्लॉज (खण्ड) जोड़ा जाएगा।
11. अन्य पिछड़ा वर्ग को भी जम्मू कश्मीर में आरक्षण के तमाम अधिकार मिलेंगे, जो अब तक राज्य में लागू नहीं थे।
12. जम्मू कश्मीर में गवर्नर की जगह लेफ्टिनेंट गवर्नर लेगा। जिसे राज्य के मुख्यमंत्री से ज्यादा अधिकार हासिल होंगे, दिल्ली राज्य की तरह।
13. अब पूरे देश के लोग जम्मू कश्मीर में जा कर बस सकते हैं, वहां के वोटर बन सकते हैं। वहां जमीन या अन्य संपत्ति खरीद सकते हैं, बिजनेस कर सकते हैं जो इससे पहले संभव नहीं था।
14. दोनों राज्यों में संपत्ति, सर्विस काडर, पुलिस और दूसरे विभागों का बंटवारा होगा।
15. जम्मू कश्मीर केन्द्र शासित प्रदेश में राजनीति हमेशा के लिए बदल जाएगी।

जम्मू कश्मीर के संबंध में नया ''राष्ट्रपति आदेश'' लागू

आदेश ने बदल दी राज्य की संवैधानिक, भौगोलिक और राजनीतिक पहचान

05 अगस्त, 2019 का दिन देश के इतिहास में हमेशा के लिए दर्ज हो गया। जब जम्मू कश्मीर के संबंध में भारत के राष्ट्रपति ने एक नया आदेश जारी किया, जिसके बाद जम्मू कश्मीर की स्थिति हमेशा के लिए बदल गई। इसी के साथ अनुच्छेद 370 में संशोधन और राज्य के पुनर्गठन होने का रास्ता साफ हो गया।

संविधान (जम्मू और कश्मीर में लागू) आदेश, 2019—इसके तहत राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने 14 मई 1954 से लागू राष्ट्रपति के आदेश (प्रेसिडेंशियल ऑर्डर) को निरस्त कर दिया।

इसके साथ ही 1954 के आदेश में समय-समय पर हुए तमाम संशोधन भी निरस्त हो गए। इसको निरस्त करने के लिए जो नया ऑर्डर जारी किया गया है, उसका नाम है संविधान (जम्मू और कश्मीर में लागू) आदेश, 2019।

अब इस नए आदेश के तहत भारत के संविधान के सभी अनुच्छेद राज्य में लागू हो जाएंगे, इसके साथ वो संशोधन भी लागू होंगे, जो समय-समय पर संविधान में किये गए। यानि भारत का संविधान जम्मू कश्मीर में ऐसे ही लागू होगा जैसा कि अन्य राज्यों में। इस आदेश को पारित करने के लिए भारत के राष्ट्रपति ने अनुच्छेद 370 में निहित उन्हीं शक्तियों का उपयोग किया है, जिसका उपयोग कर भारत के प्रथम राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद ने 1950, 1952 और 1954 का आदेश जारी किया था।

गौर करने वाली बात ये है कि अब तक जो भी कानून भारत की संसद बनाती थी, उसको जम्मू कश्मीर राज्य को छोड़कर, बनाया जाता था। इस आदेश के बाद समस्त नए कानून जम्मू कश्मीर में अन्य राज्यों के साथ बिना किसी बाधा के लागू होंगे।

जम्मू कश्मीर राज्य संवैधानिक रूप से अन्य राज्यों की तरह बराबरी के दर्जे पर आ गया है। इससे पहले राज्य के राज्यपाल को सदर-ए-रियासत के नाम से संबोधित किया जाता था।

अब शब्दावली हटाकर जम्मू कश्मीर के राज्यपाल के तौर पर संबोधित किया जाएगा। जम्मू कश्मीर के संबंध में गृहमंत्री अमित शाह ने राज्यसभा में 2 संशोधन बिल पेश किये हैं।

पहला बिल—अनुच्छेद 370 से संबंधित इस बिल में इस अनुच्छेद के क्लॉज 2 और 3 को खत्म करने का प्रस्ताव रखा गया है। यानि इसके बाद अनुच्छेद 370 में सिर्फ क्लॉज-1 रह जाएगा।

दूसरा बिल—दूसरा बिल जम्मू कश्मीर राज्य के पुनर्गठन से संबंधित है। इस बिल के मुताबिक 2 नए केन्द्र शासित प्रदेशों के गठन का प्रस्ताव।

पहला केन्द्र शासित प्रदेश होगा, जम्मू और कश्मीर : राज्य में दिल्ली की तरह विधानसभा होगी। दूसरा होगा, लद्दाख, लक्षद्वीप की तरह केन्द्र शासित प्रदेश होगा, कोई विधानसभा नहीं होगी।

आर्टिकल 35ए—संविधान (जम्मू और कश्मीर में लागू) आदेश, 2019 के लागू होते ही आर्टिकल 35ए स्वत: खत्म हो गया है।

संसद का नागरिक अभिनंदन

कश्मीर पर भारत भ्रमित रहा - दीपक विसपुते

जम्मू-कश्मीर भारत की समस्या कभी नहीं रही।

रायपुर। भारतीय संसद द्वारा आर्टिकल 370 और आर्टिकल 35ए को हटाने का निर्णय अभूतपूर्व था। यह निर्णय भारतीय संसद के दोनों सदनों द्वारा लिया गया है, यह वास्तव में गत 72 वर्षों से चली आ रही भ्रम की स्थिति को हमेशा के लिए मिटा दी गई।

उक्त उद्‌गार, रायपुर समता कॉलोनी में स्थित महाराजा अग्रसेन इंटरनेशनल कॉलेज के सभागार में राष्ट्रीय सुरक्षा मंच के द्वारा 17 अगस्त को आयोजित भारतीय संसद का नागरिक अभिनंदन समारोह में मुख्य वक्ता संघ के क्षेत्र प्रचारक दीपक विसपुते जी ने व्यक्त किए।

अपने उद्‌बोधन में दीपक विसपुते जी ने कहा कि, स्वतंत्रता के बाद से 72 वर्षों तक आर्टिकल 370 और 35ए पर पाकिस्तान कभी भी भ्रमित नहीं रहा, उनके इरादे पक्के रहे किन्तु भारत हमेशा भ्रमित रहा और भारत की राजनीतिक इच्छा शक्ति के अभाव में यह समस्या और गंभीर बनती चली गई। परिणामस्वरुप जम्मू कश्मीर में अलगाववादियों के मंसूबे मजबूत होते चले गए और हम देखते रहे। जम्मू कश्मीर पर पाकिस्तान का रुख प्रारम्भ से ही स्पष्ट था, हम उसे ठीक से समझ नहीं पाए।

देश की आजादी के समय ही कश्मीर रियासत के महाराजा हरिसिंह ने अपनी रियासत को भारत में मिलाने के विलय पत्र पर नि:शर्त हस्ताक्षर किए थे। तब तक स्पष्ट था कि, जम्मू कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है, लेकिन बाद में आर्टिकल 370 और 35ए पिछले दरवाजे से जोड़ा गया, जिसका संसद के दोनों सदनों का समर्थन भी नहीं लिया गया और ये समस्या आगे बढ़ती चली गई। इसके लिए पाकिस्तान ने जब जब भारत पर हमला किया तब तब उसे मुँहकी खानी पड़ी। आगे दीपक जी ने कहा कि, कश्मीर के पहले मुख्यमंत्री शेख अब्दुल्ला कश्मीर का सुल्तान बनना चाह रहा था और हमें ब्लैकमेल करना शुरू किया। 1964 से 1967 के बीच लालबहादुर शास्त्री जी ने इस विषय को हैंडल किया। सितम्बर 1964 के संसद में आर्टिकल 370 पर डिबेट हुई तो उस वक्त 27 सांसदों में 4 सांसद जम्मू कश्मीर के थे जिन्होंने इस आर्टिकल को समाप्त करने की अपील की थी, किन्तु बाद के वर्षों में राजनीतिक इच्छाशक्ति के अभाव में इस पर सही निर्णय नहीं ले सके और तुष्टिकरण की राजनीति शुरू हुई। 1990 में तो हद पार हो गई जब वहां से कश्मीरी पंडितों को मार मार कर भगाया गया जो आज भी देश के अन्य भागों में शरणार्थियों की जिंदगी जी रहे हैं। पाकिस्तान के इशारे पर जम्मू कश्मीर में आतंकवाद को पनाह मिली और जम्मू कश्मीर की आम जनता को हमेशा दहशतगर्दी में जीने के लिए मजबूर किया गया। कुछ मुट्‌ठी भर लोग अपने स्वार्थ के कारण भारत को आँखे दिखाते रहे।

आज भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, गृहमंत्री अमित शाह और संसद के द्वारा इस अस्थायी आर्टिकल को समाप्त करते हुए एक बड़ा साहसिक निर्णय लिया है। अब हम अखण्ड भारत की ओर एक कदम आगे बढ़े हैं, आगे अखण्ड भारत का सपना देखना चाहिए। ऐसे समय में संसद का नागरिक अभिनंदन करना गौरव की बात है।

(शेष पृष्ठ १२ पर)

राष्ट्रीय एकात्मता-अखंडता को पुष्ट करने वाली पहल का अभिनंदन करना चाहिए

पू. सरसंघचालक और माननीय सरकार्यवाह का वक्तव्य

भारतीय संविधान के अस्थायी प्रावधान अनुच्छेद 370 को समाप्त कर भारत के संविधान को अन्य राज्यों के समान जम्मू कश्मीर राज्य में भी पूर्ण रूप से लागू करने तथा जम्मू कश्मीर राज्य के पुनर्गठन के भारत सरकार के साहसिक तथा ऐतिहासिक निर्णय एवं संसद के दोनों सदनों द्वारा इसके अनुमोदन का हम स्वागत करते हैं, अभिनंदन करते हैं।

संविधान निर्माताओं की प्रारम्भ से ही यह मंशा थी कि भारत का संविधान भारत के सभी राज्यों में समान रूप से लागू हो। तात्कालिक विशेष परिस्थितियों के कारण अनुच्छेद 370 के अस्थायी प्रावधान को भारतीय संविधान में जोड़ा गया था। सरकार के इस निर्णय से संविधान निर्माताओं की यह इच्छा पूर्ण हुई है। संवैधानिक दृष्टि से अब जम्मू कश्मीर राज्य भी भारत के सब राज्यों के समान है। राज्य के पुनर्गठन से लद्दाख क्षेत्र के लोगों की दीर्घकालिक अभिलाषा पूर्ण हुई, अब उनके समन्वित विकास में देश के सहयोग का मार्ग भी प्रशस्त हुआ है।

अनुच्छेद 370 के दुरुपयोग से उत्पन्न संवैधानिक विसंगतियों को दूर करने के लिए डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी, पं. प्रेमनाथ डोगरा जी के नेतृत्व में प्रजा परिषद का ऐतिहासिक आंदोलन, जम्मू कश्मीर सहित भारत के देशभक्तों ने सतत संघर्ष किया; बलिदान दिया; यातनाएं सहीं; उन सभी का हम कृतज्ञता पूर्वक स्मरण करते हैं।

जम्मू कश्मीर के सभी निवासियों के लिए यह हर्ष का विषय है कि इस निर्णय से देश के अन्य राज्यों की तरह भारतीय संविधान के अन्तर्गत सुशासन एवं समग्र विकास का अवसर उन्हें भी प्राप्त होगा। शेष भारत की जनता जम्मू कश्मीर के समाज के विकास एवं कल्याण के कार्य में पूर्ण रूप से सम्मिलित होगी, यह हमें विश्वास है। सभी देशवासियों को अपने संकीर्ण स्वार्थों एवं राजनैतिक मतभेदों से ऊपर उठकर संविधान की सर्वोच्चता व उसकी मूल भावना को स्थापित करने वाले तथा राष्ट्रीय एकात्मता-अखंडता को पुष्ट करने वाली इस पहल का अभिनंदन करना चाहिए।

मोहन भागवत
सरसंघचालक

सुरेश (भय्याजी) जोशी
सरकार्यवाह

जम्मू कश्मीर राज्य का पुनर्गठन

जम्मू कश्मीर में दिल्ली की तरह विधानसभा होगी। भारत सरकार के अनुमोदन पर राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने अनुच्छेद 370 और 35ए को हटा दिया है और साथ ही जम्मू कश्मीर राज्य का पुनर्गठन करने का भी आदेश जारी कर दिया है। इसके तहत 2 केन्द्र शासित प्रदेश बनेंगे—1. जम्मू कश्मीर, और 2. लद्दाख। इसमें जम्मू कश्मीर में केन्द्र शासित प्रदेश दिल्ली की तरह विधानसभा भी होगी। लेकिन लद्दाख लक्षद्वीप की तरह केन्द्र शासित प्रदेश होगा। दोनों ही प्रदेशों के अलग-अलग उप-राज्यपाल होंगे।

टेरर फंडिंग मामले में पूर्व विधायक इंजीनियर राशिद को एनआईए ने किया गिरफ्तार

शुक्रवार, 9 अगस्त की रात नेशनल इन्वेस्टीगेशन एजेंसी (एनआईए) ने श्रीनगर से पूर्व विधायक इंजीनियर राशिद को टेरर फंडिंग के मामले में गिरफ्तार किया है। टेरर फंडिंग मामले में पहली राजनीतिक गिरफ्तारी है, इससे पहले टेरिर फंडिंग मामले में बिजनेस मैन जहूर अहमद वताली, शब्बीर शाह, आसिया अंदराबी समेत अन्य अलगाववादियों को गिरफ्तार किया जा चुका है। पिछले 04 अगस्त को श्रीनगर में इंजीनियर राशिद से एनआईए ने पहली बार पूछताछ की थी। आगे भी पूछताछ जारी रहेगी।

दरअसल, पाकिस्तान से टेरर फंड लेकर कश्मीर घाटी में पहुंचाने के मुख्य आरोपी जहूर वताली से पूछताछ में पता चला था कि, घाटी में टेरर फंडिंग के इस्तेमाल के तार इंजीनियर राशिद से सीधे तौर जुड़ते हैं। इंजीनियर राशिद अलगाववादियों का राजनीतिक चेहरा रहा है, जो लंगेट विधानसभा से विधायक चुने गए थे।

हाल ही में ईडी ने वताली की 8 करोड़ की संपत्ति जब्त की थी। वताली को एनआईए ने मार्च के पहले सप्ताह में दिल्ली से गिरफ्तार किया था। इसके जरिये से एनआईए ने कश्मीर घाटी में टेरर नेटवर्क और मनी लॉन्ड्रिंग के पूरे नेटवर्क का खुलासा किया था। बताया जा रहा है कि इंजीनियर राशिद का नाम भी इसी वताली से पूछताछ में सामने आया था।

इंजीनियर राशिद लंगेट विधानसभा के निवृत्तमान विधायक हैं, जिसने हाल ही में नए नेता बने शाह फै सल की पार्टी से हाथ मिलाकर नया ग्रुप बनाया था। राशिद ने शाह फैसले के समर्थन से निर्दलीय उम्मीदवार के तौर पर बारामूला सीट से लोकसभा चुनाव भी लड़ा था। जिसमें वो तीसरे नंबर पर रहे थे। आने वाले विधानसभा चुनावों में भी शाह फैसल और राशिद साथ मिलकर चुनाव मैदान में उतरने वाले हैं।

विवादों में रहने वाले अलगावावादी इंजीनियर राशिद—

1. भाजपा के विरोध में इंजीनियर राशिद ने जम्मू कश्मीर विधानसभा में बीफ-पार्टी दी।
2. अफजल गुरु को निर्दोष बताया और उसके लिए माफी की मांग करते हुए भारत सरकार के खिलाफ अभियान चलाया।
3. अफजल गुरु की लाश मांगी, राज्यसभा में जीतने के लिए कांग्रेसी नेता गुलाम नबी आजाद ने इंजीनियर राशिद का वोट पाने के लिए अफजल गुरु को फांसी देने और लाश न सौंपने पर माफी मांगी। जिस पर कई कांग्रेस सांसदों ने हस्ताक्षर किये, जब इसकी कॉपी इंजीनियर राशिद तक पहुंची। तब राज्यसभा चुनाव में राशिद ने गुलाम नबी के लिए वोट किया।
4. कई बार प्रेस में, प्रदर्शन में सरेआम कहा कि, ''कश्मीर भारत का हिस्सा नहीं''।
5. इंजीनियर राशिद विधायक रहते हुए हमेशा जनमत संग्रह की मांग करता रहा।

एनआईए ने टेरर फंडिंग मामले में गिरफ्तार इंजीनियर राशिद को पटियाला हाउस स्थित स्पेशल कोर्ट में पेश किया। जहां से उसे 14 अगस्त तक पुलिस रिमांड पर भेजा गया है। पुलिस राशिद से मामले को लेकर पूछताछ करने वाली है।

सिख समाज ने भारतीय संस्कृति की मिशाल पेश की

रायपुर। जम्मू-कश्मीर में धारा 370 हटाए जाने के बाद उपजे हालातों के बीच पुणे में योजना नगर, के के फॉर्म, लोह गांव में फंसी 32 कश्मीरी युवतियों की सिख समाज ने बड़ी सहायता कर भारतीय संस्कृति की मिशाल पेश की। रायपुर से पुणे-मुंबई, दिल्ली तक सिख समाज मदद को आगे आये और सभी युवतियों को प्लेन से कश्मीर ले गए और उन्हें घर तक पहुंचा कर आए।

बताते हैं कि धारा 370 हटाने से पहले ये युवतियां कश्मीर से पुणे जॉब के लिए पहुंची थीं। इंटरव्यू के दौरान ही केन्द्र सरकार के फैसले के बाद उनका कश्मीर में अपने परिजनों से संपर्क टूट गया। क्योंकि वहां फोन-मोबाइल सब बंद थे। इन युवतियों की लाख कोशिश के बाद भी वे परिजनों की खबर नहीं ले सकीं। युवतियों के अनुसार पुणे में उन्हें कुछ लोगों ने दिग्भ्रमित भी किया। कुछ लोगों ने उन्हें दुबई में जॉब दिलाने की बात कही। इस बीच ये युवतियां जिस सीनियर लेडी रुकय्या किरमानी के साथ गई थी वह किसी तरह दिल्ली पहुंच गई। उसने दिल्ली में दिल्ली गुरुद्वारा प्रबंधन कमेटी को अपनी व्यथा बताई। इतना सुनते ही पूरा सिख समाज हरकत में आ गया। फेसबुक व मोबाइल पर पूरे समाज से मदद मांगी गई। दिल्ली के निर्देश पर पुणे सिख समाज के लोग लेह ग्राउंड पहुंचे जहां कश्मीरी युवतियां फंसी थीं। 4-5 इनोवा व मिनी बस में भरकर पहुंचे सिख समाज के लोगों के साथ गुरुद्वारा पहुंची। पहले सबको भोजन कराया गया। किसी के पास पैसे नहीं थे। फिर सबको कश्मीर ले जाने के लिए हवाई टिकटों का प्रबंधन करने रायपुर से दिल्ली तक लोग सामने आए। पुणे, मुंबई, दिल्ली होते हुए ये लोग सभी को लेकर कश्मीर पहुंचे।

भोला भैया, हरपाल सिंह सलूजा, रायपुर के परविंदर सिंह भाटिया की भी इसमें अहम भूमिका रही। सभी युवतियों को कश्मीर घरों तक छोड़ने तीन सिख साथ गए। इनमें बलजीत सिंह (बब्लू), अहलूवालिया और शामिल थे। इन्होंने भास्कर को बताया कि जब वे वहां पहुंचे तो सारी दुकानें बंद थीं। सड़कों पर कोई नजर नहीं आ रहा था। तब आर्मी से मदद ली गई। टैक्सियां भी बड़ी मुश्किल से मिलीं। कुछ लोगों ने तो एक हद तक जाने के बाद आगे जाने से मना कर दिया था क्योंकि युवतियां श्रीनगर से 50 से 70 किलोमीटर दूर तक के नगरों की थीं। 9 अगस्त से 12 अगस्त तक चले इस घटनाक्रम में सिख समाज ने फिर भारतीय संस्कृति की मजबूत जड़ों को साबित कर दिखाया।

इस टीम का अभिनन्दन—दिल्ली के हरमिंदर सिंह अहलूवालिया, बलजीत सिंह बब्लू, रायपुर के परविंदर सिंह भाटिया, पुणे के भोला सिंह अरोरा, हरपाल सिंह राजपाल, रणजीत सिंह अरोरा, जसपाल सिंह खंडूजा, रमिंदर सिंह राजपाल, कुलदीप सिंह टूटेजा आदि।

एनसीपी व बीजेपी के लोगों ने भी की मदद—जब युवतियों को बचा लिया गया तो इनको सुरक्षित एयरपोर्ट पहुंचाने के लिए निकल पड़े। सरदार हरपाल सिंह व राजपाल सबसे पहले वहां पहुंचे। उनके द्वारा जब खांदवे नगर के राष्ट्रवादी कांग्रेस के कार्यकर्ता विश्वास खांदवे व प्रदीप चौहान एवं गांव के बीजेपी के सरपंच सुनील खांदवे को भी जब यह पता लगा तो वह भी तुरंत एक 17 सीटर बस लेकर वहां पर पहुंच गए। बच्चियों को मिलने के बाद यह समझ में आया कि बच्चियां काफी घबराई हुई हैं एवं डरी हुई थीं। इसका कारण यह

(शेष पृष्ठ १२ पर)

आर्थिक स्वतंत्रता व समाज के स्वावलम्बन के लिए लघु उद्योग स्थापित करने की आवश्यकता- डॉ. भागवत

नागपुर। रा.स्व. संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी ने कहा कि देश की आर्थिक स्वतंत्रता तथा समाज के स्वावलंबन की प्राप्ति के लिए बड़ी संख्या में लघु उद्योग स्थापित करने की आवश्यकता है। सरसंघचालक जी लघु उद्योग भारती की स्थापना के रजत जयंती वर्ष के अवसर पर आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन के उद्घाटन सत्र में संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि 1994 में लघु उद्योग भारती की स्थापना हुई थी। इसमें मोरोपंत पिंगले जी का बड़ा योगदान रहा। अपने यहां देश की स्वतंत्रता को सुरक्षित रखने के लिए संविधान है। राजनैतिक और आर्थिक स्वतंत्रता के लिए संविधान में प्रावधान है। सामाजिक स्वतंत्रता के लिए कुछ निर्देश दिये हैं, वो काम समाज यानि हमारा काम है। ईस्ट इण्डिया कम्पनी जैसी बड़ी कंपनियां दो सौ वर्ष पहले नहीं थीं, पर व्यापार तो होता था। उद्यमिता तो थी। मनुष्य की आर्थिक स्वतंत्रता का विषय महत्वपूर्ण है। इसका ध्यान पहले से रखा गया है। आपस में परस्पर निर्भरता का ध्यान पहले से रखा गया है।

आज दो शब्द महत्वपूर्ण हैं, एक समग्र और दूसरा उद्योग परिवार। उद्योगों से संबंधित परिवार में यदि परिवार भावना से जो निर्भरता होती है वो स्वतंत्रता को बाधित नहीं करती और व्यापार भावना से जो निर्भरता होती है वो हो सकता है। स्वतंत्रता को बाधित करे, यह चलाने वाले की नियत पर निर्भर करता है। संबंधों के आधार पर विचार करना, समग्र विचार करना और विकेन्द्रित विचार करना आवश्यक है।

किसी भी क्षेत्र की सत्ता का महत्व है, आज अर्थ एक सत्ता है, राज्य एक सत्ता है, सामरिक शक्ति यह सत्ता है, इनका स्वरुप एक दूसरे से संपर्क में रहे और मानवहित के लिए सदा एक दिशा में चलती रहे। इस मर्यादा तक विकेन्द्रित होने से स्वतंत्रता का लाभ सबको मिलता है और ऐसी स्वतंत्रता आर्थिक क्षेत्र में लाना है तो हमें लघु उद्योग, सूक्ष्म उद्योग, मध्यम उद्योग और कारीगिरी पर जोर देना पड़ेगा। यह विचार आज मानसिक, वैचारिक वातावरण में नदारद है। पाश्चात्य विचार संघर्ष का है, जिसके पास बल है वह टिकेगा। मनुष्य के जीवन में उद्योग, व्यापार और कृषि तीनों का अपना अपना महत्व है, आवश्यकता है। सम्पत्ति यानि केवल मुद्रा नहीं। प्राकृतिक संसाधन और मनुष्य का पुरुषार्थ का एकत्रित प्रयास यानि सम्पति है, लेकिन वह पर्यावरण का शोषण करके नहीं होना चाहिये तो वह सम्पत्ति है, समृद्धि है, वह लक्ष्मी कहलाएगी। तीनों को समान रूप से देखना होगा।

उन्होंने कहा कि पर्यावरण की दृष्टि से, मनुष्य के आर्थिक स्वातंत्र्य के दृष्टि से, समाज की समृद्धि की दृष्टि से समग्र विचार करना और विकेन्द्रित दृष्टि से विचार करना आवश्यक है। इस दृष्टि पथ से काम करके सम्पूर्ण देश को इस विचार पथ पर लाना है नहीं तो समस्याओं के उत्तर नहीं मिलेंगे। लघु उद्योग, मध्यम उद्योग, क्षेत्र को संगठित करके एक वातावरण बनाना होगा। समग्र नीति बने उसके लिए शक्ति खड़ी करनी पड़ेगी। यह अपना काम है। लक्ष्य पक्का है। लघु उद्योग, मध्यम उद्योग, सूक्ष्म उद्योग और कारीगिरी पर विचार आगे बढ़ाना होगा। समग्रता, परिवार, संबंधों की बात करनी पड़ेगी। देश का वैचारिक मानसिक वातावरण बदले उसके लिए अपनी स्वयं की मानसिकता बदलनी होगी।

The Caravan, तुलसी गबार्ड और संघ

दिल्ली से एक मासिक पत्रिका निकलती है - The Caravan। चंपक, सरिता, मुक्ता, गृहशोभा प्रकाशित करने वाली 'दिल्ली प्रेस' की यह पत्रिका सन 1988 में बंद हो गयी थी लेकिन, 2009 में इसे मजबूत फंडिंग के साथ फिर से नए अवतार में लाने का प्रयास हुआ और 2010 में Caravan, नए कलेवर में लोगों के सामने आयी।

(http://indiafacts.org/caravan-2-0-why-a-defunct-leftist-magazine-was-revived/)

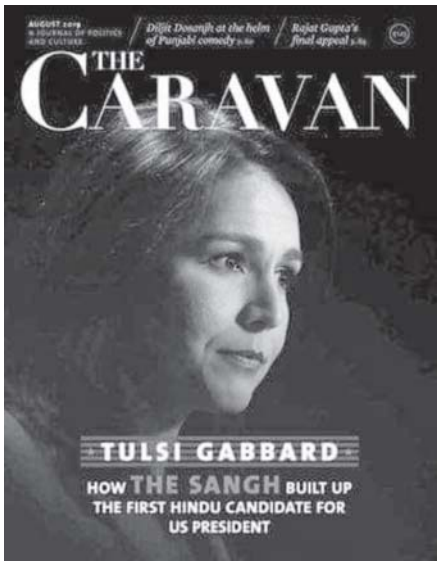

यह पत्रिका शुरु से ही हिन्दू विरोधी रही है। नए अवतार में इसे लाँच करने के लिए दिल्ली प्रेस ने संपादक चुना - विनोद जोसेफ। श्रीमान जोसेफ केरल से हैं और दिल्ली के जामिया मिलिया यूनिवर्सिटी से डॉक्टरेट की है। इनकी विचारधारा समझनी हो तो इनका बनाया हुआ शो अवश्य सुनें - 'Moist India : The Search for Economic Justice'। जोसेफ ने यह स्टोरी पैसिफिक रेडियो के लिए की थी। वामपंथी जोसेफ, हिन्दुत्व के मजबूत विरोधी रहे हैं।

इस Caravan ने मीडिया जगत में अपना दबदबा बनाए रखा है। 'India's First Long-Form Narrative Journalism Magazine' ऐसा ये अपने आप को कहते हैं। किन्तु व्यावसायिक रूप में यह सफल उपक्रम नहीं है। अंग्रेजी की अधिकतम 30,000 प्रतियां और हिन्दी 'कारवां' की मात्र 10,000 प्रतियां छपती हैं। किसी मासिक पत्रिका की इतनी कम प्रतियों में तो दिल्ली जैसे स्थान पर उसके ऑफिस का चाय-पानी का खर्चा भी निकलना मुश्किल है। फिर विनोद जोसेफ जैसे, न्यूयॉर्कर पत्रिका को छोड़ कर आने वाले पत्रकार को यह पत्रिका कैसे रख पाती है? इसकी फंडिंग कहां से होती है? या दिल्ली प्रेस के परेश नाथ और अनंत नाथ इन भाइयों में, अपने वाम - विचारों के प्रति इतनी अटूट निष्ठा है कि, वे अपने अन्य प्रकाशनों की सारी कमाई, इस Caravan में डालते हैं? इसका स्पष्ट उत्तर सामने नहीं है।

अभी Caravan का उल्लेख करने का सन्दर्भ है, इसके अगस्त अंक की कवर स्टोरी : Tulsi Gabbard- How the Sangh Built up the first Hindu candidate for US President। बड़ी रोचक स्टोरी है ये। The American Sangh's affair with Tulsi Gabbard, यह उनकी इस स्टोरी का प्रमोशन है।

कुल 57 पृष्ठों की यह विस्तृत स्टोरी लिखी है - पीटर फ्रेड्रिक ने। ये महाशय 'वायर', 'क्विन्ट' जैसे माओवादी पोर्टल्स के नियमित लेखक हैं। पीटर ने एक पुस्तक लिखी है, 'Captivating the Simple-Hearted : A struggle for Human Dignity in the Indian Subcontinent'। इस पुस्तक में उन्होंने 'ब्राम्हणों ने मूल निवासियों को कैसे दबाकर रखा है' इस पर विस्तार से लिखा है। हिन्दुत्व विरोध में जहरीले शब्दों के साथ लिखना, यह इनकी लेखन शैली है।

तो, इस महाशय ने तुलसी गबार्ड को लेकर ऐसा चित्र प्रस्तुत किया है, मानो **तुलसी गबार्ड** यह अमेरिकी राष्ट्रपति पद के चुनाव में **राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ** की प्रत्याशी हैं!

अमेरिका में राष्ट्रपति पद के चुनाव का माहौल प्रारंभ हो गया है। वहां, दो स्तरों पर चुनाव होता है। पहले, अपनी पार्टी का प्रत्याशी बनने के लिए चुनाव लड़ना पड़ता है। उसे primaries कहते हैं। वहां पर दो प्रमुख पार्टियां हैं - डेमोक्रेटिक और रिपब्लिकन। वर्तमान राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प, रिपब्लिकन पार्टी से हैं। सन् 2016 में उन्होंने अपने पार्टी से राष्ट्रपति पद का चुनाव लड़ने के

लिए 16 अन्य उम्मीदवारों को हराया था। इस बार शायद वे दोबारा चुनाव लड़ें।

डेमोक्रेटिक पार्टी से इस बार तुलसी गबार्ड सशक्त उम्मीदवार हैं। चार बार सीनेट में चुनी गयी, तुलसी गबार्ड, हवाई आर्मी नेशनल गार्ड के मेडिकल कोर में अपनी सेवाएं दे चुकी हैं। वे अमेरिका की पहली हिन्दू सांसद हैं। लेकिन, मजेदार बात यह कि 38 वर्षीय तुलसी गबार्ड मूलत: हिन्दू नहीं हैं। इनके माता-पिता हिन्दू जन्मत: नहीं हैं। माईक गबार्ड इनके पिता हैं। इनके पहले पति थे, एदुआर्दो तामयो। तो इनके वर्तमान में पति हैं - अब्राहम विलियम्स। अर्थात् दूर दूर तक हिन्दुत्व से पारिवारिक संबंध नहीं है। तो फिर ये हिन्दू कैसे हुई?

भगवान चैतन्य महाप्रभु के विचारों से ये प्रेरित हुई। हिन्दुत्व की संकल्पनाएं इन्हें अच्छी लगने लगीं। ये शाकाहारी हुईं और अपनी जीवनशैली को भी हिन्दुत्व में ढालने का प्रयास किया। बड़े सोच समझकर इन्होंने अपना नाम तुलसी रखा है। इनके भाइयों के नाम भी संस्कृत आधारित हैं। अमेरिकी सीनेट में इन्होंने भगवद्गीता हाथ में रखकर सीनेटर की शपथ ली थी और वे बड़े गर्व से अपने आप को हिन्दू कह रही हैं।

अब जरा कल्पना करें कि, ऐसी तुलसी गबार्ड यदि अमेरिका की राष्ट्रपति बनती हैं, तो विश्व का परिदृश्य कैसा रहेगा ? हमारे भारत की भूमिका क्या होगी? इस विचार से बौखलाकर एक बहुत बड़ी लॉबी पूरी दुनिया में इस समय काम कर रही है। किसी भी हालात में, डेमोक्रेटिक पार्टी के अंदर प्राथमिक चुनाव में तुलसी गबार्ड को पार्टी का प्रत्याशी नहीं बनने देना, यही इस लॉबी का लक्ष्य है। The Caravan में प्रकाशित 57 पृष्ठों का यह आलेख, इसी बड़ी सी रचना की एक छोटी सी कड़ी है।

पश्चिम जगत में राइट विंग या राइट एक्सट्रिमिस्ट या हार्डकोर नेशनलिस्ट ऐसे शब्दों का अर्थ अच्छे परिपेक्ष्य में नहीं लिया जाता। वहां 'राइट विंग' को 'नाजी' विचारधारा से जोड़ते हैं। इसलिए यदि किसी पर एक्सट्रीम राइट विंग का तमगा लग गया, तो वह समाज में सामान्यत: स्वीकार्य नहीं होता। यही तमगा तुलसी गबार्ड के साथ जोड़ने की पूरी कोशिश हो रही है।

इसकी शुरुआत हुई, इस वर्ष के प्रारंभ में, जब अमेरिका के प्रख्यात शो, 'लास्ट वीक टुनाइट' में जॉन ओलिवर ने तुलसी गबार्ड को एक्सट्रीम राइट विंग के रुप में चित्रित किया। एचबीओ के इस लोकप्रिय शो से प्रेरणा लेकर हमारे यहां शेखर सुमन ने 'मूवर्स एन्ड शेखर्स' यह टॉक शो शुरू किया था। बाद में नेटफ्लिक्स पर हसन मीनाझ ने अपने 'पेट्रियट एक्ट' इस कार्यक्रम में इसी लाइन पर तुलसी गबार्ड की तुलना की। हसन मीनाझ भारतीय - अमेरिकन है। लेकिन, अपने शो में वह मोदी और भाजपा के नेताओं की खिल्ली उड़ाता रहता है।

इन सभी ने मानो अपना मिशन बनाया है कि तुलसी गबार्ड को पूर्णत: अतिवादी दक्षिणपंथी दिखाया जा सके और इस प्रकार का नरेटिव बनाने का काम चल रहा है।

The Caravan के इस 57 पृष्ठीय आलेख में, तुलसी गबार्ड को संघ, भाजपा, विश्व हिन्दू परिषद, बजरंग दल के साथ जोड़ा गया है। समय-समय पर अमेरिका में हुए सार्वजनिक कार्यक्रमों में तुलसी गबार्ड के साथ मंच साझा करने वाले संघ और भाजपा के अधिकारियों/नेताओं के फोटो आलेख के साथ दिए हैं। संघ से जुड़े लोग, कैसे तुलसी गबार्ड को बड़ी संख्या में चन्दा दे रहे हैं, इसका भी वर्णन है। अनेक असत्य बातें धड़ल्ले से लिखी हैं। जैसे—

Sangh activists demolished the Babri Masjid in 1992, setting of communal violence across India. The same year, L K Advani decided that the BJP needed a global presence. He founded the Overseas Friends of BJP to help project 'a positive and correct image'।

बिलकुल गलत! Overseas Friends of BJP की स्थापना सन् 1982 में हुई है। लेकिन, इस पर से यह

स्पष्ट होता है कि, किस प्रकार का नरेटिव ये लोग स्थापित करना चाह रहे हैं।

कुल मिलकर एक मिली – जुली वैश्विक साजिश है, जिसमें सारे वामपंथी, माओवादी, चर्च, क्रिश्चियन संस्थाएं एक होकर तुलसी गबार्ड को खांटी संघी के रूप में स्थापित करने पर तुली हुई हैं। अगर ऐसा प्रस्थापित होता है, तो तुलसी गबार्ड का डेमोक्रेटिक पार्टी में प्रत्याशी के रूप में चुन कर आना कठिन होगा, ऐसा गणित है।

अर्थात्, अब वैश्विक राजनीति में 'हिन्दुत्व' और 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' यह महत्वपूर्ण शब्द बन गए हैं।

— प्रशांत पोळ

(पृष्ठ ५ का शेष)

इस कार्यक्रम में मंच पर भूतपूर्व सैनिक कर्नल जे. एस. कक्कड़, अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष अधिवक्ता आशीष सोनी और प्रसिद्ध व्यवसायी अमर पारवानी ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए भारत सरकार के साहसिक निर्णय पर उद्बोधन दिया।

राष्ट्रीय सुरक्षा मंच के संयोजक डॉ. राजेन्द्र दुबे ने कार्यक्रम में उपस्थित बड़ी संख्या में आए हुए सभी महानुभावों का आभार व्यक्त किया। इस कार्यक्रम का संचालन प्रभात मिश्र ने किया। कार्यक्रम का समापन पूर्वांचल की बहनों द्वारा वंदे मातरम् गा कर हुआ। इस अवसर पर नगर के प्रबुद्ध नागरिक माता भगिनी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

(पृष्ठ ८ का शेष)

था कि बच्चियों का अपने परिवारों से तीन-चार दिन से कोई संपर्क नहीं हो रहा था। सभी सेवादारों ने बच्चियों को विश्वास दिलाया कि घबराने की कोई बात नहीं है। आप सभी सुरक्षित हैं आप सभी पूना शहर में हैं, जो कि हिंदुस्तान का सबसे सुरक्षित शहर है। इन सब बातों के बाद बच्चियों को काफी तसल्ली हुई। उनका रोना धोना बंद हुआ। सभी बच्चियों की भोजन व्यवस्था की। फिर 14 बच्चियों की जिनकी टिकट पुणे से थी उन्हें पुणे एयरपोर्ट पर सुरक्षित पहुंचा दिया। बची हुई बच्चियों को पुणे स्टेशन से तीन टैक्सियों में खालसा एड के दो सिख सेवादारों की सुरक्षा में सुरक्षित मुंबई एयरपोर्ट पहुंचाया गया, यहाँ से सभी बच्चियां दिल्ली सुरक्षित पहुंची। वहां से सरदार बलजीत सिंह बबलू एवं उनके साथियों द्वारा इन बच्चियों को सुरक्षित कश्मीर में इनके घरों में पहुंचा दिया गया है।

(आभार-राजेश जॉन पॉल, दैनिक भास्कर)

दामोदर गणेश बापट जी सदा स्मृतियों में बनें रहेंगे

कुष्ठ पीड़ितों की सेवा में समर्पित बापट जी—बापट जी ने चांपा से आठ किलोमीटर दूर ग्राम सोंठी, कात्रे नगर में भारतीय कुष्ठ निवारक संघ द्वारा संचालित आश्रम में कुष्ठ पीड़ितों की सेवा के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया था। इस कुष्ठ आश्रम की स्थापना सन् 1962 में कुष्ठ पीड़ित सदाशिवराव गोविंदराव कात्रे जी ने की थी। वहां वनवासी कल्याण आश्रम

से बापट जी सन् 1972 में पहुंचे और कात्रे जी के साथ मिलकर उन्होंने कुष्ठ पीड़ितों के इलाज से लेकर उनके सामाजिक-आर्थिक पुनर्वास के लिए सेवा के अनेक प्रकल्पों की शुरूआत की। पद्श्री से सम्मानित डॉ. दामोदर गणेश बापट जी का स्वर्गवास गत 17 अगस्त 2019 को हो गया है। उनके द्वारा किया गया कार्य सदैव प्रेरणा देता रहेगा और श्रद्धेय बापट जी सदा स्मृतियों में बनें रहेंगे।

ध्येय समर्पित व्यक्तित्व के रूप में सुषमा जी की स्मृति सदा रहेगी

अत्यंत अकल्पनीय, अविश्वसनीय दु:खद समाचार है श्रीमती सुषमा स्वराज जी का असामयिक निधन। यह अत्यंत वेदनादायक है।

लगभग 45 वर्षों का उनका सामाजिक, राजनैतिक जीवन विविध दृष्टि से आदर्शवत और अनुकरणीय रहा है। एक आदर्श कार्यकर्ता, कुशल नेत्री, सक्षम और प्रभावी मंत्री, ध्येय समर्पित व्यक्तित्व के रूप में उनकी प्रतिमा हम सबके स्मृति में सदा रहेगी। हृदय में मातृवत् स्नेह, देश और समाज की समस्याओं के प्रति संवेदनशील अंत:करण और प्रतिकूलताओं पर मात करने की तेजस्विता से वे सदा कर्मशील रही हैं। स्वास्थ्य की मर्यादाओं को समझकर अपने आप को भागदौड़ की राजनीति से मुक्त करते हुए सामाजिक कार्य में सहयोग करते रहने की इच्छा उन्होंने प्रकट की थी, परन्तु इस दु:खद घटना से हम व्यथित हैं।

वर्तमान में देश में घटित ऐतिहासिक पहल से वे प्रसन्न थीं और यह उन्होंने हम से विदा लेते समय प्रकट किया है। ऐसे परिवर्तन के काल में उनका स्वर्गगमन अत्यंत असहनीय है। इस दु:खद घड़ी में हम उनके सभी परिवारजनों के प्रति वेदनापूर्ण हृदय से संवेदना प्रकट करते हैं। ईश्वर हम सभी को यह आघात सहन करने का बल प्रदान करे। ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि, अपने चरणों में दिवंगत आत्मा को स्थान प्रदान करें।

ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति:

मोहन भागवत
सरसंघचालक

सुरेश (भय्याजी) जोशी
सरकार्यवाह

सुषमा जी को राष्ट्र सेविका समिति ने श्रद्धांजलि अर्पित की

राष्ट्र सेविका समिति की प्रमुख संचालिका शांताक्का जी ने कहा कि, स्वर्गीय सुषमा स्वराज जी विश्वबंधुत्व का मूर्तिमंत रूप थीं। एकात्म मानवदर्शन को अपने आचरण में अपनाया था। समिति प्रमुख पूर्व विदेश मंत्री स्व. सुषमा जी को श्रद्धांजलि अर्पित कर रही थीं। नागपुर स्थित समिति के केन्द्रीय कार्यालय, देवी अहिल्या मंदिर में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया था। उन्होंने कहा कि, भगवान श्रीकृष्ण को अपेक्षित प्रिय भक्त के सभी गुण सुषमा जी में थे। समिति की पूर्व प्रमुख संचालिका प्रमिला ताई मेढे जी ने सुषमा जी का स्मरण करते हुए कहा कि, सुषमा जी भारत मां की सेवा के लिये अन्य रूप में फिर से जन्म लेंगी।

कार्यक्रम में मंच पर उपस्थित पूज्य आचार्य श्री जितेंद्रनाथ महाराज ने सुषमा जी के स्नेह, वात्सल्य, प्रतिभा तथा प्रयत्न की पराकाष्ठा के गुणों की प्रशंसा करते हुए उनके सेविका स्वरूप को नमन किया। समिति के विविध प्रकल्प के कार्यकर्ताओं ने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

गिलोय से लाभकारी उपचार

गिलोय एक ऐसी औषधि है जो कई प्रकार के बीमारी के इलाज में उपयोगी होती है। गिलोय एक बेल होती है जो अधिकांश पेड़ों पर लिपटी नजर आती है। इसकी बेल के पत्ते पान के पत्ते जैसे होते हैं। ये बेल घर पर भी उगा सकते है। इसे गमलें में लगाकर रस्सी से बांध दें।

- यह आयुर्वेद की उत्तम औषधि है। इसका रस अनेक प्रकार की बीमारियाँ ठीक करता हैं।
- बेल का रस, इसके पत्ते और इसकी जड़ हर चीज उपयोगी होती है। इसके तने में स्टार्च व पत्तों में प्रोटीन कैल्शियम और फॉस्फोरस पाया जाता है।
- गिलोय में एंटीबायोटिक गुण होते हैं जो, शरीर के रोगों से लड़ने की क्षमता बढ़ाता हैं।
- इस बेल का एक छोटासा टुकड़ा जमीन में डाल दे तो ये पौधा बन जाता है।

रक्त की कमी को दूर करें—गिलोय शरीर के रोगों से लड़ने की शक्ति को बढ़ाता हैं व रक्त की कमी को दूर करता है। शरीर में रक्त की कमी होने पर शहद में रस मिलाकर सेवन करें।

रक्त की स्वच्छता—गिलोय की बेल का रस पानी के साथ सुबह खली पेट पीने से शरीर में रक्त स्वच्छ रहेगा और कभी रक्त से जुड़ी कोई बीमारी नहीं होगी।

कैंसर—गिलोय के जड़ों में काफी असरदार एंटीबॉयोटिक तत्व होते है, जो कैंसर के बचाव और उसके उपचार में उपयोगी है। गिलोय, तुलसी, 4-5 नीम के पत्ते और गेंहू के ज्वारें, ये सब मिलाकर इनका रस पीने से कैंसर जैसे गंभीर रोग में भी लाभ मिलता है।

गठिया—शहद के साथ गिलोय का चूर्ण कफ, सोंठ के साथ गिलोय के सेवन से गठिया जैसे रोगों में काफी आराम मिलता है।

हृदय से संबंधित समस्याएं—हाई कोलेस्ट्रॉल कम करने और रक्त में शर्करा का स्तर नियंत्रित रखने में उपयोगी होती हैं व हृदय से जुड़े रोगों से बचने में भी उपयोगी हैं।

कमजोरी दूर करें—यदि आप अपने शरीर में कमजोरी महसूस करते है तो सप्ताह में 3 दिन गिलोय का प्रयोग करें और साथ में थोड़ा शहद भी खाएं। इससे कुछ दिनों में शरीर चुस्त-दुरुस्त दिखने लगेगा।

डेंगू में रामबाण उपचार—गिलोय बेल का 6 इंच का टुकड़ा तुलसी के 4-5 पत्ते, पपीते के 3 पत्ते, थोड़ा एलोविरा और गेंहू के ज्वारें इन सबको पीसकर रस निकालकर पीने से शरीर में प्लेटलेट तेजी से बढ़ने लगते हैं। डेंगू और चिकनगुनिया के रोग में यह उपाय रामबाण काम करते है।

बुखार—बुखार दूर करने में गिलोय एक अच्छी आयुर्वेद औषधि हैं। शहद के साथ गिलोय के रस का सेवन करने से बुखार जल्दी उतरने लगता है। तेज बुखार के साथ यदि खाँसी भी हैं तो पीपल का चूर्ण मिलाएं। मलेरिया और टाईफाइड के उपचार में भी गिलोय लाभकारी है। गिलोय का रस और शहद मिलाकर पीने से पित्त का बढ़ना रुकता है और साथ ही कब्ज भी दूर होता है।

खुजली—रक्त का साफ न होना खुजली का कारण हैं। यदि रक्त में जमा विषैले पदार्थ निकल जाएं तो खुजली की समस्या दूर हो जाएगी। शहद के साथ गिलोय का जूस पीएं और हल्दी के साथ गिलोय कर पत्ते पीसकर खुजली वाली जगह पर लगाएं।

उल्टी—गर्मी के मौसम में उल्टी आने की शिकायत होती है। यदि उल्टी हो तो शहद या मिस्त्री गिलोय के रस में मिलकर दिन में 2 बार पीएं।

पीलिया—पीलिया ठीक करने के लिए एक चम्मच त्रिफला चूर्ण, एक चम्मच गिलोय चूर्ण और काली मिर्च शहद में मिलाकर चाट लें। एक गिलास मठ्ठे में एक चम्मच गिलोय के पत्तों का रस मिलाकर सुबह-सुबह

पीने से पीलिया ठीक होता हैं।

टीबी का रोग—टीबी के रोगी को शहद और इलायची के साथ गिलोय के रस का सेवन करना चाहिए।

चेहरा सुन्दर बनाने के लिए गिलोय—चेहरे पर झुर्रियां और पिंपल्स है तो गिलोय पीसकर इसका लेप चेहरे पर लगाएं और 15 मिनट बाद चेहरा ठंडे पानी से धो लें। इस उपाय से चेहरे के दाग धब्बे और झाइयां दूर होती है। गिलोय का पानी भी पीयें इससे रक्त साफ होगा और पिंपल्स नहीं निकलेंगे। फटी त्वचा ठीक करने के लिए दूध में गिलोय का तेल मिलाकर गरम कर लें, फिर से ठंडा होने पर अपनी त्वचा पर लगाएं। इससे त्वचा साफ और मुलायम होती हैं। बरसात के मौसम में एक चम्मच गिलोय का रस प्रतिदिन पीने से किसी भी रोग की संभावना 50 प्रतिशत तक कम हो जाती हैं।

इस माह में किए जाने वाले कृषि कार्य

धान फसल—

- धान का भंडारण करते समय आद्रता स्तर 10-12 प्रतिशत से कम होना चाहिए।
- धान के भंडारण कक्ष को तथा जूट के बोरों को विसंक्रमित करके ही भंडारण करें।
- धान भंडारण के कीड़ों के नियन्त्रण के लिए फोस्टोक्सीन दवा का प्रयोग करें।
- कीड़ों से बचाव हेतु स्टॉक को तरपोलिद से ढक दें।

सब्जियां—

- गोभी की पूसा सुक्ति, पूसा पौषजा प्रजातियों की नर्सरी तैयार करें।
- बंद गोभी की किस्म गोल्डन एकर, पूसा कैबेज हाईब्रिड 1 की नर्सरी तैयार करें।
- पालक की पूसा भारती किस्म की बुआई आरम्भ कर सकते हैं।
- बैंगन की पौध पर 3 ग्राम मैंकोजेब और 1 ग्राम कार्बेन्डाजिम को 1 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- अगेती गाजर की पूसा वृष्टि किस्म की बुआई करें।
- गाजर को पर्ण अंगमारी रोग से बचाव के लिए थीरम 2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करके बोएं।
- गाजर को स्क्लेरोटिनिया विगलन से बचाव के लिए 15 ग्राम प्रति 3 लीटर पानी में घोलकर मृदा को सींचे।

फल फसलें—

- वयस्क आम के पौधों में बची हुई उर्वरक की मात्रा (500 ग्राम नाइट्रोजन, 250 ग्राम फॉस्फोरस व 500 ग्राम पोटास) को मानसून की बारिश के पश्चात डालें।
- नींबू वर्गीय फलों में यदि डाईबैक, स्कैब तथा सूटी मोल्ड बीमारी का प्रकोप हो तो 3 ग्राम कॉपर ऑक्सीक्लोराइड दवा एक लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- नींबू वर्गीय फलों में कैंकर बीमारी की रोकथाम के लिए 5 ग्राम स्ट्रैपटोसाइक्लीन तथा 10 ग्राम कॉपर सल्फेट दवा को 100 लीटर पानी में घोलकर या 3 ग्राम कॉपर ऑक्सीक्लोराइड को प्रति 1 लीटर पानी की दर से घोलकर पौधों में डालें।

सरसों—

- इस माह में सरसों की अगेती किस्मों जैसे कि, पूसा सरसों 25, पूसा सरसों 28, पूसा सरसों 27 व पूसा तारक की बुआई करें।
- सरसों में सफेद रतुआ के बचाव के लिए मेटालैक्सिल (एप्रॉन 35 एस डी) 6 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज दर से या बैविस्टिन 2 ग्राम/किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें।
- सरसों में खरपतवार नियंत्रण के लिए बुआई से पहले 2.2 प्रति ली./हे. की दर से फ्लूक्लोरोलिन का 600 से 800 ली. पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- यदि बुआई से पहले खरपतवार नियंत्रण नहीं किया गया हैं तो 3.3 लीटर पेंडीमिथालिन (30 ई.सी.) को 600 से 800 लीटर पानी में घोलकर बुआई के 1-2 दिन बाद छिड़काव करें।

गुरु न मिलें तो हनुमानजी को गुरु मान लें

— पं. विजयशंकर मेहता

कहा जाता है मानव जीवन की पहली पाठशाला परिवार होती है। सच भी है, कोई बच्चा माता-पिता या परिवार के बड़े-बुजुर्गों की अंगुली पकड़कर ही दुनियादारी देखने और उसे समझने की शुरुआत करता है। लेकिन, इस तथ्य को भी नहीं भुला सकते कि माता-पिता या परिवार से प्राप्त शिक्षा सफलता की सीढ़ियां तो दिखा सकती हैं परंतु लक्ष्य तक पहुंचने के लिए कुछ और भी चाहिए। बिना सही मार्गदर्शन के केवल ज्ञान या जानकारी के बूते कामयाबी के शीर्ष तक नहीं पहुंचा जा सकता। यह मार्गदर्शन सिर्फ गुरु ही दे सकते हैं। बात महान दार्शनिक अरस्तू की हो या स्वामी विवेकानंद की, इनके समग्र दर्शन और व्यक्तित्व के पीछे गुरु कृपा का आलोक ही काम कर रहा था। स्वामी विवेकानंद ने तो स्वयं ही स्वीकार किया था कि यदि गुरु रूप में रामकृष्ण परमहंसजी नहीं मिले होते तो मैं साधारण नरेंद्र से ज्यादा कुछ नहीं होता। हर माता-पिता की चाहत होती है उनकी संतान श्रेष्ठ होकर शीर्ष तक पहुंचे। समय रहते बच्चों के लिए कोई योग्य गुरु ढूंढ दीजिए। वे वहीं पहुंच जाएंगे, जिस मुकाम पर आप उन्हें देखना चाहते हैं। हालांकि श्रेष्ठ गुरु मिल जाना भी इस दौर की बड़ी चुनौती है। तुलसीदासजी ने श्री हनुमान चालीसा की सैंतीसवीं चौपाई, **'जै जै जै हनुमान गोसाई कृपा करहुं गुरुदेव की नाई'** लिखकर इस चुनौती को बहुत आसान कर दिया है। कोई अच्छा गुरु नहीं मिले तो हनुमानजी को ही गुरु और हनुमान चालीसा को मंत्र मान लीजिए। सफल कैसे हुआ जाए और सफलता मिल जाने के बाद क्या किया जाए यह हनुमानजी से अच्छा कोई नहीं सिखा सकता। गुरु रूप में उनकी जो कृपा बरसेगी वह आपका जीवन बदल देगी।

संकल्प का असर

महाभारत में कौरव सेना में भीष्म पितामह, द्रोणाचार्य, कर्ण जैसे महारथी थे। इसीलिए दुर्योधन को लग रहा था कि वह आसानी से पांडवों को युद्ध में हरा देगा, लेकिन पांडव पक्ष में श्रीकृष्ण स्वयं थे। वे अर्जुन के सारथी बने और युद्ध शुरू होने से पहले श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा कि हनुमानजी से प्रार्थना करो और अपने रथ के ऊपर ध्वज के साथ विराजित करो। श्रीकृष्ण की बात मानकर अर्जुन ने ऐसा ही किया।

कथा के अनुसार अर्जुन का रथ श्रीकृष्ण चला रहे थे और स्वयं शेषनाग ने रथ के पहियों को पकड़ रखा था, ताकि दिव्यास्त्रों के प्रहार से भी रथ पीछे न खिसके। अर्जुन के रथ की रक्षा श्रीकृष्ण, हनुमानजी और शेषनाग कर रहे थे। जब युद्ध समाप्त हो गया तो अर्जुन ने श्रीकृष्ण से कहा कि पहले आप रथ से उतरिए मैं आपके बाद उतरूंगा। तब श्रीकृष्ण ने कहा कि नहीं अर्जुन पहले तुम उतरो। भगवान की बात मानकर अर्जुन रथ से उतर गए, इसके बाद श्रीकृष्ण भी रथ से उतर गए। शेषनाग पाताल लोक चले और हनुमानजी रथ के ऊपर से अंतर्ध्यान हो गए। जैसे ही ये सब उतर गए तो अर्जुन के रथ में आग लग गई। थोड़ी ही देर में रथ पूरी तरह जल गया।

ये देखकर अर्जुन हैरान गए। उन्होंने श्रीकृष्ण से पूछा कि, भगवान ये कैसे हुआ? श्रीकृष्ण ने कहा कि, ये रथ तो भीष्म पितामह, द्रोणाचार्य और कर्ण के दिव्यास्त्रों के प्रहारों से पहले ही खत्म हो चुका था। इस रथ पर हनुमानजी विराजित थे, मैं स्वयं इसका सारथी था, इस वजह ये रथ सिर्फ मेरे संकल्प की वजह से चल रहा था। अब इस रथ का काम पूरा हो चुका है। इसीलिए मैंने ये रथ छोड़ दिया और ये भस्म हो गया है।

अंक में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने है। संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं। न्यायालय क्षेत्र, रायपुर (छ.ग.)

।। श्रद्धांजलि ।।

सुषमा स्वराज

जन्म - 14.02.1952 • स्वर्गवास - 06.08.2019

अरुण जेटली

जन्म - 28.12.1952 • स्वर्गवास - 24.08.2019

दामोदर गणेश बापट

जन्म - 29.04.1935 • स्वर्गवास - 17.08.2019

आज इन महानुभावों को अपने बीच नहीं पाकर हृदय की वेदना का अनुभव करते हैं।
इनके द्वारा किया गया कार्य हम सबको सदैव प्रेरणा देता रहेगा और वे सदा स्मृतियों में बनें रहेंगे।
हम सभी दिवंगत आत्मा की शान्ति और सद्गति के लिए ईश्वर के श्रीचरणों में प्रार्थना करते हैं।

।। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, प्रचार विभाग, छत्तीसगढ़ प्रान्त

आर.एन.आई. पंजी. क्र.-६६६३५/९५ डाक पंजीयन संख्या-छ.ग./रायपुर संभाग ०६/२०१८-२०

इस माह की स्मरणीय विभूतियाँ

यादवराव जोशी
जयंती ०३ सितम्बर

दादाभाई नौरोजी
जयंती ०४ सितम्बर

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन
जयंती ०५ सितम्बर

संत विनोबा भावे
जयंती ११ सितम्बर

मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया
जयंती १५ सितम्बर

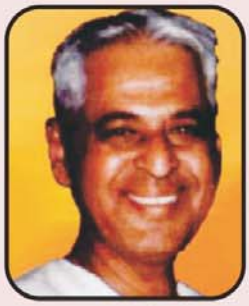

लक्ष्मणराव ईनामदार
जयंती २१ सितम्बर

रामधारी सिंह दिनकर
जयंती २३ सितम्बर

पं. दीनदयाल उपाध्याय
जयंती २५ सितम्बर

अशोक सिंहल
जयंती २७ सितम्बर

सुरेशराव केतकर
जयंती २८ सितम्बर

प्रेषक,
शाश्वत राष्ट्रबोध
गद्रे स्मृति भवन, जवाहर नगर,
रायपुर छ.ग. पिन - ४९२००१
फोन नं. - ०७७१-४०७२०७०

शाश्वत राष्ट्रबोध - मासिक पत्रिका
माह - सितम्बर २०१९

प्रति,

.....

.....

.....

स्वामी, मुद्रक व प्रकाशक नरेन्द्र जैन, जागृति मण्डल, गोविन्द नगर, रायपुर द्वारा गुप्ता ऑफसेट से छपवाकर
शाश्वत बोध विकास समिति, गद्रे स्मृति भवन, जवाहर नगर, रायपुर से प्रकाशित।
संपादक - नरेन्द्र जैन, कार्यकारी संपादक - महेश कुमार शर्मा, E-mail : rashtrabodh.sangh@gmail.com

डाक टिकट

Composed & Designed : Avinash # 98263-31427